भारतीय इतिहास संगलन समिति के पुस्तक विमोचन समारोह में
माननीय राज्यपाल श्री गुलाब चन्द कटारिया के संबोधन का प्रारूप

दिनांक : 19 जून 2024, बुधवार	समय : 5:00 PM	स्थान : भरलुमुख, गुवाहाटी

- अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना के राष्ट्रीय महासचिव श्री हेमन्त धिं मजुमदार जी,
- लेखक डॉ. श्यामसुंदर हरलालका
- समाजसेवी श्री शांतिलाल हरलालका जी
- भारतीय इतिहास संकलन समिति, असम के अध्यक्ष डॉ. गजेंद्र अधिकारी जी,
- कार्यकारी अध्यक्ष श्रीमती झूला शर्मा जी,
- उपस्थित अन्य अतिथिगण
- समिति के अधिकारी एवं सदस्यगण
- देवियों और सज्जनों,

नमस्कार!

1. भारतीय इतिहास संकलन समिति, असम के इस पुस्तक विमोचन समारोह में आप सभी को संबोधित करते हुए मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है। यह मेरे लिए गर्व का विषय है कि असम में मारवाड़ी समाज के इतिहास से जुड़ी पुस्तक 'History of Marwaris of Assam' का विमोचन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। मैं इसके लिए भारतीय इतिहास संकलन समिति को धन्यवाद देना चाहता हूं कि इसने मुझे यह अवसर प्रदान किया।

   मैं समिति के साथ-साथ पुस्तक के लेखक डॉ. श्याम सुंदर हरलालका जी को इस पुस्तक के लोकार्पण के लिए हार्दिक बधाई देता हूं। इस महत्वपूर्ण विषय पर अध्ययन करने और पुस्तक का रूप देने के प्रयास की प्रशंसा करता हूं।

2. देवियो और सज्जनो,

   इतिहास किसी भी जाति, राज्य व राष्ट्र की नींव होता है, जिस पर भविष्य की इमारत खड़ी

होती है। इतिहास एक दर्पण होता है, जिसमें किसी जाति, समुदाय या राष्ट्र की छवि दिखाई देती है। इतिहास आने वाली पीढ़ी का मार्गदर्शन भी करता है। युवा पीढ़ी को इतिहास में दर्ज अपने पूर्वजों की गौरव गाथा, उनके संघर्ष और बलिदान से प्रेरणा मिलती है।

मैं समझता हूं कि असम में मारवाड़ी समाज के संघर्ष और उत्थान की गाथा को संकलित करना सराहनीय कार्य है। यह पुस्तक मारवाड़ी समाज के लिए मील का पत्थर साबित होगी तथा आने वाली पीढ़ी के लिए अमूल्य दस्तावेज के रूप में काम करेगी।

3. मुझे जानकर प्रसन्नता हुई कि इससे पहले डॉ. श्यामसुंदर हरलालका जी ने हिंदी में असम में मारवाड़ी समाज के इतिहास पर भी एक पुस्तक का प्रकाशन किया है। संभवतः 'History of Marwaris of Assam' उस पुस्तक का अंग्रेजी संस्करण है।

यह जानकर भी अति प्रसन्नता हुई कि समिति इस पुस्तक के असमिया संस्करण का भी प्रकाशन करेगी। यह सराहनीय है कि इससे समाज के हर जाति एवं समुदाय के लोगों को असम में मारवाड़ी समाज के यागदान के बारे में जानने का अवसर प्राप्त होगा।

4. इस पुस्तक में लगभग 300 वर्षों से भी अधिक समय पहले मरुभूमि राजस्थान से असम में आए मारवाड़ी समाज के पूर्वजों के ऐसे कार्यों की विवेचना की गई है, जो सभी समुदाय के लोगों को प्रेरणा देने का काम करेगी। इससे लोगों को मारवाड़ी समाज की जीवन शैली, संस्कार और बुद्धिमता के बारे में भी जानने का मौका मिलेगा।

इसके अलावा यह मारवाड़ी समाज के बारे में प्रचलित गलत धारणाओं को दूर कर सोहार्द एवं समन्वय का वातावरण स्थापित करने में भी महत्वपूर्ण योगदान देगा।

5. देवियो एवं सज्जनो,

मारवाड़ी समाज राजस्थान से निकल कर जहां भी गया, वहां राजस्थान की सौंधी मिट्टी की खुशबू को बरकरार रखा। यहां का मारवाड़ी समाज राजस्थान से कोसों दूर रहकर भी यह समाज अपनी सांस्कृतिक, परंपराओं, खान-पान सहित वेष-भूषा को नहीं भूला है।

मारवाड़ी समाज ने अपनी कड़ी मेहनत के दम पर अपनी पहचान बनाए रखने के साथ ही असम के बहुमुखी विकास के क्षेत्र में अहम भूमिका निभाई। मारवाड़ी समाज के लोगों द्वारा समाज निर्माण, आर्थिक विकास, शिक्षा, सेवा एवं जनकल्याण के अनेक विशिष्ट उपक्रम राष्ट्र स्तर पर संचालित किए जा रहे हैं।

मैं मारवाड़ी समाज की समाज के विकास एवं मानव कल्याण के लिए रचनात्मक एवं सृजनात्मक गतिविधियों की सराहना करता हूं। इस समाज को और मुखरता के साथ दूसरे लोगों की मदद करने की भावनाओं के साथ आगे बढ़ना होगा।

6. यह समाज असम के मूल निवासियों के साथ घुल-मिलकर यहां के हर क्षेत्र में हो रहे विकास कार्य में अपनी अहम भूमिका निभाने का काम किया है। असम के साहित्य, पत्रकारिता, कला-संस्कृति, खेल एवं राजनीति के क्षेत्र में भी मारवाड़ी समाज ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। साहित्य क्षेत्र में रूपकुंवर ज्योतिप्रसाद अगरवाला का योगदान उल्लेखनीय है।

7. देवियो और सज्जनो,

हाल के कुछ वर्षों में हमने नई पीढ़ियों में काफी बदलाव होने की आहट महसूस की है। हमें अपने बच्चों को राजस्थानी परंपरा, लोकाचार, संस्कृति सहित समाज की जड़ों से जोड़कर रखने की शिक्षा देनी होगी।

यह समाज अपने परोपरकार और व्यापार में सबसे आगे रहने के लिए जाना जाता है। ऐसे में हमें अपनों बच्चों को अपने पूर्वजों के गौरवशाली कार्यों के बारे में बताना होगा।

8. मुझे गर्व है कि असम के मारवाड़ी समाज राज्य की आर्थिक व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने में अहम भूमिका निभाते आ रहे हैं। मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि यहां का मारवाड़ी समाज सामाजिक गतिविधियों में भी अपना सक्रिय योगदान देता है।

अंत में, मैं आशा करता हूं कि भविष्य में भी यहां का मारवाड़ी समाज राज्य के आर्थिक एवं सामाजिक विकास में अपना योगदान देता रहेगा।

पुन: आप आप सभी को पुस्तक के विमोचन के लिए बधाई एवं बहुत-बहुत शुभकमानाएं।

धन्यवाद।

जय हिन्द।